गुन्हे किए अजान में, गुन्हें देखे सो भी अजान।
दम न ले बीच हुकमें, जब हकें पूरी दई पेहेचान।। ३१ ।।

मैंने गुनाह अनजाने में किए और अनजाने में ही देखे। जब राजजी महाराज ने पूरी पहचान दे दी तो हुकम ने बीच में सांस भी नहीं लेने दिया।

पेहेचान लई सो भी खुदी, मैं न्यारी हुई तिनसे।
न्यारी होत सो भी खुदी, ए खुदी निकलत नाहीं मैं।। ३२ ।।

मैंने अपने आपको पहचान लिया। इसमें भी 'मैं' अहंकार का सूचक है। जिनसे मैं अलग हो गई। इसमें में भी 'मैं' शब्द आ गया। इस तरह से यह 'मैं' शब्द किसी तरह से निकलता ही नहीं।

महामत कहे ए मोमिनों, कोई नाहीं हक बिगर।
लाख बेर मैं देखिया, फेर फेर सहूर कर।। ३३ ।।

श्री महामति कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने बार-बार विचार करके लाख बार देखा तो पाया कि श्री राजजी महाराज के बिना कुछ है ही नहीं।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ५५७ ।।

मैं खुदी की पेहेचान

मैं लाखों विध देखिया, कहूं खुदी क्योंए न जाए।
ए क्यों जावे पेड़से, जो दूजी हकें दई देखाए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने लाखों तरह से देख लिया। यह मैखुदी किसी तरह से हटती नहीं। ठीक ही तो है। यह हटे कैसे? जब श्री राजजी ने ही इसे दूसरे रूप में (माया का रूप) दिखा दिया है।

जो मैं मांगों इस्क को, तो इत भी आप देखाए।
ए भी खुदी देखी, जब इलमें दई समझाए।। २ ।।

मैं जो इश्क मांगती हूं तो यहां भी मै खुदी दिखाई देती है। यह आपके इलम ने अच्छी तरह से समझा दिया है। इसमें भी मुझे मै खुदी दिखाई दी।

हक पेहेचान किनको हुई, इत दूसरा कौन केहेलाए।
ऐसी काढी बारीकी खुदियां, हक भी पेहेचान कराए।। ३ ।।

यहां श्री राजजी महाराज की पहचान किसको हुई है? दूसरा है ही कौन? खुदी की ऐसी बारीक बातें निकाल दें तभी श्री राजजी की पहचान होती है।

तन तो अपने अर्स में, सो तो सोए नींद में।
जागत हैं एक खावंद, ए नींद दई जिनने।। ४ ।।

अपने तन परमधाम में नींद में सोए पड़े हैं। एक श्री राजजी महाराज ही जागते हैं, जिन्होंने यह फरामोशी हमें दी है।

दे कर नींद रूहन को, खेल देखावत नजर।
तो ए खेल कौन देखत, कोई है बिना हुकम कादर।। ५ ।।

रूहों को नींद देकर नजर के द्वारा खेल दिखाते हैं। तो फिर यह कौन खेल देख रहा है? क्या श्री राजजी के हुकम के बिना और कोई है भी?

Nijanand App

आपन सोए हैं अर्समें, तले हक कदम।
ए जो खेल खेलावे खेलमें, कोई है बिना हक हुकम।।६।।

हम तो श्री राजजी के चरणों के तले सोए पड़े हैं। जो इस संसार में खेल खिला रहा है क्या इस संसार में श्री राजजी के हुकम के बिना कोई और है?

इत हुकम एक हक का, और हकै का इलम।
हुकम इलम या खेल को, देखो सोइयां तले कदम।।७।।

यहां तो केवल श्री राजजी का एक हुकम है और उन्हीं का इलम है। यह खेल तो हुकम और इलम का है। हम तो परमधाम में श्री राजजी के चरणों तले सोए पड़े हैं।

कहे इलम तुमहीं पट, तुमहीं कुंजी पट की।
कुल्ल अकल दई तुम को, देखो उलटी या सीधी।।८।।

इलम कहता है, हे मोमिनो! तुम ही परदा हो। तुम ही कुंजी हो। जागृत बुद्धि का ज्ञान भी तुमको दे दिया है। अब इसे सीधा देखो या उलटा देखो।

बीच खेल और खावंद, पट तुमारा वजूद।
पीठ दे हक को ए देखत, जो ना कछू है नाबूद।।९।।

खेल और श्री राजजी के बीच परदा तुम्हारे तन का ही है। तुम श्री राजजी महाराज को पीठ देकर इस नाचीज दुनियां को देख रहे हो।

ए खेल हुकम इलम का, हमें नींदमें देखावत।
करने हांसी अर्स में, खेल में भुलावत।।१०।।

यह खेल हुकम और इलम का है जो हमें नींद में दिखाया जा रहा है। परमधाम में हमारे ऊपर हंसी करने के लिए हमें खेल में भुलाया जा रहा है।

इत दूसरा कोई कहूं नहीं, सब देख्या हुकम इलम।
जो ए उड़े नाबूद हुकमें, तो देखो बैठे आगे खसम।।११।।

यहां दूसरा कोई कहीं नहीं है। सब जगह हुकम और इलम को ही देखा। यह नाचीज संसार श्री राजजी के हुकम से समाप्त हो जाए तो हम श्री राजजी के सामने बैठे दिखाई देंगे।

हकें द्वार दिया हाथ अपने, और दई इलम पूरी पेहेचान।
तो क्यों सहें आड़ा पट, क्यों न खोलें द्वार सुभान।।१२।।

श्री राजजी महाराज ने परमधाम का दरवाजा हमारे हाथ में दे दिया है और इलम से पूरी पहचान करा दी है। तो फिर यह परदा कौन सहन करे? क्यों नहीं दरवाजा खोलकर श्री राजजी के दर्शन करें?

जो पट खोलों हुकम बिना, लगत खुदी गन्हे डर।
ना तो हाथ कुंजी दई आसिक के, हक बिछोहा सहें क्यों कर।।१३।।

यदि श्री राजजी महाराज के हुकम के बिना दरवाजा खोल देती हूं, तो मैखुदी का डर लगता है। वरना श्री राजजी महाराज ने हमारे हाथ में चाबी दे ही दी है, तो हम वियोग क्यों सहन करें?

Nijanand App

जो होए मुझपे इस्क, तो देखों न खुदी हुकम।
एक नाहीं मोपे इस्क, तो आड़ा देखों हुकम इलम।। १४ ।।

जो हमारे अन्दर जरा भी इश्क होता तो मैं, मैखुदी और हुकम की पहचान न करती। मेरे पास एक इश्क ही तो नहीं है जिसे हुकम और इलम ने छिपा रखा है।

न तो द्वार खोल के, आगे देखें न अर्स रेहेमान।
इत क्यों देखों राह हुकम की, हकें दई कुंजी पेहेचान।। १५ ।।

वरना दरवाजा खोल करके परमधाम में श्री राजजी महाराज के दर्शन न कर लेते? जब श्री राजजी महाराज ने तारतम ज्ञान की कुंजी और पहचान दे दी है, तो हुकम का रास्ता क्यों देखें?

गोते न खांऊं बिना जल, जो आवे इस्क।
तो हुकम खुदी ना कछू गुना, पट दम न रखे बेसक।। १६ ।।

यदि इश्क आ जाए तो फिर बिना जल के डुबकियां न लगानी पड़ें। फिर हुकम और अहंकार को कोई गुनाह नहीं लगता। श्री राजजी और मेरे बीच एक पल के लिए भी परदा न रहता।

इस्क मांगूं तो भी गुना, और खुदी ए भी गुनाह होए।
जो देखों हुकम इलम को, मोहे बांध लई बिध दोए।। १७ ।।

इश्क मांगती हूं तो गुनाह लगता है। यह मैखुदी भी अहंकार होता है। अब हुकम और इलम को देखो। मुझे दोनों तरफ से बांध रखा है।

ए देखो सहूर खुदी मांगना, ए दोऊ तले हुकम।
तो खोल दरवाजा अपना, क्यों न मिलों अपने खसम।। १८ ।।

विचार करके देखो तो मैखुदी और मांगना दोनों हुकम के अधीन हैं, तो फिर अपने घर के दरवाजे खोलकर अपने पति से क्यों न मिलें?

खुदी गुना सब हुकमें, मांगूं बोलूं सब हुकम।
पट खोलूं या जो करूं, सब हुकम कहे इलम।। १९ ।।

मैखुदी का गुनाह भी हुकम से लगता है। मैं जो बोलती भी हूं वह भी हुकम ही है। परदा खोलूं या जो कुछ करूं, यह सब हुकम ही है, ऐसा इलम कहता है।

इत खुदी न गुनाह किन सिर, या ढांप खोल तेरे हाथ।
देख खावंद या खेल को, हुकम इलम तेरे साथ।। २० ।।

यहां पर अहंकार का गुनाह किसी के सिर नहीं है, चाहे दरवाजा बन्द रखो या खोलो। श्री राजजी की तरफ देखो या खेल की तरफ। हुकम और इलम अब तेरे साथ हैं।

सब मोमिनों को सौंपिया, कह्या मोमिन दिल अर्स।
देख आप दिल विचार के, दिल मोमिन अरस-परस।। २१ ।।

अब मैंने सब मोमिनों सहित आपको सौंप दिया है और आप हम मोमिनों के दिल में अर्श करके बैठ गए हैं। अब आप हमको देखें और हम आपको देखें। हमारा और आपका दिल एकाकार हो गया है।

Nijanand App

दिल मोमिन का अर्स है, जो देखे अर्स मोमिन।
हक चाहें बैठाया अर्स में, तो तेरे आगे ही नहीं ए तन।। २२ ।।

मोमिनों का दिल अर्श है, इसलिए मोमिन ही अर्श को देखते हैं। श्री राजजी महाराज परमधाम में जब बिठाना चाहें, तो संसार के यह तन पहले ही समाप्त हो जाएंगे।

महामत कहे ए मोमिनों, हकें हांसी करी पूरन।
देख खावंद या खेल को, ए कुंजी तेरा दिल मोमिन।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने हम पर पूरी हंसी की है। वह तुम्हारे दिल में बैठे हैं और तारतम ज्ञान की कुंजी भी तुम्हें दी है। अब तुम चाहे संसार को देखो, चाहे श्री राजजी को देखो।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ५८० ।।

हुकम की पेहेचान

ताला द्वार न कुंजी खोलना, समझाए दई सबों आप।
दिल अपने में हक बसें, ज्यों जाने त्यों कर मिलाप।। १ ।।

न कोई ताला है, न दरवाजा, न कुन्जी है, न खोलना है। यह बातें, हे मेरी रूह! श्री राजजी ने तुम्हें सब समझा दी हैं। अब अपने दिल में राजजी बैठे हैं। जैसा चाहो उनसे मिलो।

सेहेरग से नजीक, आड़ा पट न द्वार।
खोली आंखें समझ कीं, देखती न देखे भरतार।। २ ।।

श्री राजजी महाराज अब सेहेरग से नजदीक हैं। अब न कोई परदा है, न कोई दरवाजा है। तुम्हारी आत्मदृष्टि भी खोल दी है। फिर भी तू धनी को देखते हुए भी नहीं देखती है।

हुकम इलम खेल एकै, और कोई न कहूं दम।
इत रूह न कोई रूहन की, जो कछू होए सो हुकम।। ३ ।।

यह हुकम और इलम का ही एक खेल है। और यहां कुछ नहीं है। यहां परमधाम की कोई रूहें भी नहीं है। यहां जो कुछ भी है हुकम ही है।

अपनी सुरतें हुकम, खेलावत हुकम।
खेलत सामी हुकमें, ए देखावत तले कदम।। ४ ।।

अपनी सुरता हुकम से ही है। हुकम ही खेल खिला रहा है। हुकम से ही खेलते हैं। हुकम से पता चलता है कि परमधाम में चरणों तले बैठे हैं।

अरवाहें जो कोई अर्स की, सो सब हक आमर।
हम हुज्जत लई सिर अर्स की, बैठी आगूं हक नजर।। ५ ।।

परमधाम की जो भी रूहें हैं, वह सब राजजी के हुकम से ही है, जो हमारे नाम का दावा लिए हुए हैं। हम तो परमधाम में श्री राजजी के चरणों तले सामने बैठी हैं।

Nijanand App